मोदी को मुख्यमंत्री बनाने में भंडारी की भूमिका अहम्

■ आलोक मेहता

नई दिल्ली, 3 अक्टूबर। गुजरात में केशुभाई पटेल को हटाकर नरेन्द्र मोदी को मुख्यमंत्री बनाने में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पृष्ठभूमि वाले राज्यपाल सुंदर सिंह भंडारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पटेल की जिद और विधायकों के दबाव को संभालने का काम पार्टी के पूर्व अध्यक्ष कुशाभाऊ ठाकरे ने किया तथा राष्ट्रीय स्तर पर भंडारी ने अपने ढंग से इस परिवर्तन के लिए सही सलाह दी। घोषित रूप से राज्यपाल पार्टी के अंदरूनी मामले में दखल नहीं देते, लेकिन अनौपचारिक रूप से भंडारी ने केशुभाई पटेल की राजनीतिक और प्रशासनिक विफलताओं की विस्तृत जानकारी प्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री को पहुंचाई थी।

विश्वस्त उच्चस्तरीय सूत्रों के अनुसार भंडारी प्रधानमंत्री वाजपेयी के बहुत करीबी माने जाते हैं। गृहमंत्री आडवाणी और उनके समर्थक इस बात का दबाव बनाए हुए थे कि

अहमदाबाद में नरेंद्र मोदी के साथ केशुभाई पटेल।

गुजरात में भाजपा की इज्जत बचाने के लिए नेतृत्व परिवर्तन होना ही चाहिए। केशुभाई के समर्थक राजनीतिक गलियारों में कुछ समय पहले तक यह दावा करते थे कि उन्हें अटल जी का आशीर्वाद प्राप्त है और संघ मुख्यालय का वरदहस्त भी उन पर है, लेकिन हाल की चुनावी विफलताओं के अलावा भंडारी ने जब भी प्रधानमंत्री से मंत्रणा की, तब उन्होंने भूकंप तथा सूखा राहत कार्यों में रही गड़बड़ियों एवं केशुभाई पटेल की कमजोरियों की पूरी जानकारी दी। इसके बाद ही अटल जी ने नेतृत्व परिवर्तन की हरी झंडी दी।

पार्टी महासचिव नरेन्द्र मोदी के नाम पर भी राष्ट्रीय स्तर पर मत-भिन्नताएं रही हैं। कुछ महीनों पहले अकाल राहत कार्यों में विफलताओं को लेकर नरेन्द्र मोदी ने सार्वजनिक रूप से अपनी सरकार की आलोचना की थी, तब कई वरिष्ठ केन्द्रीय नेता दुखी हुए थे। उन्होंने मोदी को संयम रखने की सलाह दी थी। वैसे नेतृत्व परिवर्तन की बात उस समय भी गरम हुई, लेकिन अटल जी के अस्वस्थ रहने के कारण कोई अंतिम फैसला नहीं हो पाया। (शेष पृष्ठ 2 पर)

मोदी को मुख्यमंत्री बनाने...

पहले नहीं, केशुभाई के समर्थकों ने यह फिजा भी बनाई थी कि नरेन्द्र मोदी कम अनुभव के साथ आडवाणी खेमे से जुड़े हुए हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक के प्रचारक रहने के बाद आडवाणी को सोमनाथ रथयात्रा में शामिल रहने के कारण नरेन्द्र मोदी को आडवाणी का अधिक करीबी माना जाता था, लेकिन नरेंद्र मोदी ने पिछले महीनों के दौरान इस तरह की गलतफहमियां दूर कीं और वाजपेयी से किसी न किसी बहाने संपर्क बढ़ाया। फिर लगभग डेढ़ महीने पहले एक पुस्तक के लोकार्पण के दौरान प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख के.सी. सुदर्शन ने खुलकर नरेन्द्र मोदी की निष्ठा तथा क्षमता की सराहना की थी। उसी समय लगभग यह संकेत मिल गया था कि संघ के नेता और अटल जी मोदी को आगे बढ़ाने के लिए सहमत हो चुके हैं। फिर भी विधानसभा और लोकसभा के उपचुनाव को ध्यान में रखकर तत्काल नेतृत्व परिवर्तन नहीं किया गया। चुनाव में भाजपा की पराजय सुनिश्चित थी। यह बात लगभग अधिकांश नेता जानते थे, लेकिन केशुभाई पटेल को अंतिम अवसर दिया गया। जानकार सूत्रों के अनुसार केशुभाई पटेल द्वारा समर्पण का रहस्य यह भी है कि उनके प्रशासन के आरोपों की फाइल भी वरिष्ठ नेताओं की नजरों तक पहुंच चुकी थी। केशुभाई को यह संकेत दिलवा दिए गए कि पार्टी तोड़ने की स्थिति में कोई भी नया मुख्यमंत्री उनके विरुद्ध लगे भ्रष्टाचार के खाते खोल देगा और तब भाजपा तथा संघ के लिए ही नहीं, उनके परिजनों के लिए भी गंभीर मुश्किलें पैदा हो जाएंगी। इस संकेतों को ध्यान में रखकर ही केशुभाई ने नरेन्द्र मोदी को मुख्यमंत्री के रूप में स्वीकारे जाने की सहमति दे दी। पिछले दो दिनों में केशुभाई पटेल ने दिल्ली दरबार में यह

धमकी पहुंचाई थी कि उनकी इच्छानुसार नया नेता नहीं चुने जाने पर वह मुख्यमंत्री पद के साथ भाजपा की प्राथमिक सदस्यता से भी इस्तीफा दे देंगे।

फ्री प्रेस जर्नल - 4-10-2001